

रॉबर्ट वानॉय : भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 7

पिछले सप्ताह हम रोमन अंक IV के अंतर्गत थे, "भविष्यवक्ताओं के लिए भगवान के रहस्योद्घाटन के तरीके और साधन," बिंदु सी पर, " हम किस अर्थ में इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के बीच परमानंद की बात कर सकते हैं?" कई मुख्य धारा के बाइबिल अध्ययनों में इस आनंदमय घटना का बहुत कुछ उल्लेख किया गया है जो प्राचीन दुनिया में इज़राइल के आसपास के देशों में मौजूद थी। यह सिद्धांत दिया गया है कि आनंदमय घटनाएँ इज़राइल में भविष्यवक्ता का स्रोत थीं, और इज़राइल इससे अवगत था और आप इज़राइल के पैगम्बरों के बीच इसी तरह की घटनाएँ पा सकते हैं। सी. में हम बिंदु 3 तक नीचे आ गए थे, "निश्चित रूप से विहित भविष्यवक्ताओं की ओर से परमानंद व्यवहार के रूप में लेबल की गई हर चीज़ को ऐसा नहीं माना जा सकता है।" जो लोग इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के बीच परमानंद की घटनाओं के साक्ष्य की तलाश कर रहे हैं, उन्होंने भविष्यवाणी की किताबों में विभिन्न चीज़ों की ओर इशारा किया है जो जरूरी नहीं कि भविष्यवाणी की किताबों में थीं, बल्कि ऐतिहासिक किताबों में थीं जहां भविष्यवाणी की घटनाएं घटित हुईं या उनका उल्लेख किया गया था। मैंने पिछली बार उल्लेख किया था कि आपको इज़राइल के पैगम्बरों के बीच परमानंद की बात करते समय अतिशयोक्ति से सावधान रहना होगा, और अक्सर जो साक्ष्य उपयोग किया जाता है वह वास्तव में ठोस नहीं होता है - जैसे कि प्रतीकात्मक कार्य, मजबूत भावनात्मक अभिव्यक्ति, जैसा कि हमने यशायाह 21:3 में देखा था। और यिर्मयाह 23:9. फिर 'मैं,' या भाषण की प्रथम-पुरुष शैली जहां भविष्यवक्ता ऐसे बोलते हैं जैसे कि वे स्वयं भगवान हों, पहले व्यक्ति में बोल रहे हों। मैंने वहां उल्लेख किया है कि यह बस एक शैली है जिसके द्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि संदेशवाहक वास्तव में अपना शब्द नहीं दे रहा है बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति का शब्द दे रहा है जिसने उसे भेजा है। हमने 2 राजा 18:29 को देखा जहां एक दूत अश्शूर के राजा सन्हेरीब का संदेश हिजकिय्याह के पास लाता है - और वह पहले व्यक्ति में सन्हेरीब के लिए बोलता है। तो, फिर से, वह दूत निश्चित रूप से परमानंद में नहीं था, और प्रथम व्यक्ति का भाषण इस निष्कर्ष के लिए कोई आधार नहीं देता है कि जो पैगंबर इसका उपयोग करता है वह परमानंद की स्थिति में रहा होगा।

आखिरी बिंदु जो मुझे संख्या 3 में उस शीर्षक के अंतर्गत नहीं मिला, वह है, "भविष्यवक्ताओं को पागल करार देना।" उस संबंध में कभी-कभी 2 राजा 9:11 का उल्लेख किया जाता है। वहाँ आपके पास भविष्यवक्ताओं की मंडली का एक सदस्य है, "जब येहू अपने साथी अधिकारियों के पास गया, तो उनमें से एक ने उससे पूछा, 'क्या सब ठीक है? यह पागल आदमी तुम्हारे पास क्यों आया ? कुछ लोग उस साक्ष्य में देखते हैं कि इन भविष्यवक्ताओं को पागलों के रूप में देखा जाता था और इसका कारण यह था कि उनमें उन्मादपूर्ण व्यवहार की विशेषता थी। इसका परमानंद वाला हिस्सा निश्चित रूप से वहाँ स्पष्ट नहीं है। यह किसी व्यक्ति द्वारा येहू के पास आए इस व्यक्ति का मज़ाक उड़ाते हुए की गई टिप्पणी है।

यदि आप यिर्मयाह 29:26 को देखें तो आपके पास एक समान संदर्भ है। यिर्मयाह 29:25 में आपके पास बेबीलोन के झूठे भविष्यवक्ता के शब्द हैं। यिर्मयाह लिखता है, " शमायाह से कहो , सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यह कहता है: तू ने यरूशलेम के सब लोगों को, मासेयाह याजक के पुत्र सपन्याह को, और अन्य सब लोगों को अपने नाम से पत्र भेजे हैं। पुजारी तू ने सपन्याह से कहा, यहोवा ने तुझे यहोयादा के स्थान पर यहोवा के भवन का अधिकारी होने के लिये याजक नियुक्त किया है; जो पागल भविष्यवक्ता के समान काम करता हो, उसे तू काठ और बेड़ियों में डाल देना। तो फिर आपने अनातोत के यिर्मयाह को क्यों नहीं डाँटा , जो आपके बीच भविष्यवक्ता होने का दिखावा करता है।" अब "पागल" में यिर्मयाह को पागल के रूप में संदर्भित किया गया है, लेकिन एक झूठे भविष्यवक्ता द्वारा उसे पागल के रूप में चित्रित किया गया है। मुझे नहीं लगता कि यह आनंदित होने के बारे में कुछ कहता है। यह सिर्फ कोई है जो यिर्मयाह को उसके संदेश के कारण बदनाम करना चाहता है। इसलिए उसे पागल कहा जाता है।

यदि आप जॉन 10:20 में नए नियम पर जाएं तो यह दिलचस्प है, "[यीशु के] इन शब्दों पर यहूदी फिर से विभाजित हो गए। उनमें से बहुतों ने कहा, 'उसमें दुष्टात्मा है और वह पागल हो गया है। उसकी बात क्यों सुनें?'" यीशु को पागल क्यों कहा गया? इसलिए नहीं कि वह परमानंद था, यह उसके संदेश के कारण है। आपको इस झूठे भविष्यवक्ता के साथ यिर्मयाह में भी ऐसा ही मिलता है। इसका परमानंद से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन संदेश से इसका सब कुछ लेना-देना है। नए नियम में अधिनियम 26:24 में एक और पाठ है जहां पॉल अग्रिप्पा और फेस्तुस के सामने है और

अपने विश्वास की गवाही दे रहा है। आपने पढ़ा, “इस समय फेस्तुस ने पॉल के बचाव में बाधा डाली। तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, पॉल!” वह चिल्लाया। ‘आपकी महान सीख आपको पागल बना रही है। परन्तु इस पर पौलुस ने उत्तर दिया, ‘मैं फेस्तुस पागल नहीं हूँ। मैं जो कह रहा हूँ वह सत्य और उचित है।” उन्होंने क्या कहा था? ठीक है, यदि आप श्लोक 22 पर वापस जाएं, “मुझे आज भी भगवान की मदद मिली है और इसलिए मैं यहां खड़ा हूँ और गवाही देता हूँ। भविष्यवक्ताओं और मूसा ने जो कहा था, उसके अलावा मैं कुछ भी नहीं कह रहा हूँ, कि मसीह कष्ट सहेगा और मृतकों में से सबसे पहले जी उठेगा और अपने लोगों और अन्यजातियों के लिए जीवन का प्रचार करेगा। फेस्तुस कहता है, “तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।” इसका परमानंद की स्थिति से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए, भविष्यवक्ताओं को “पागल” के रूप में लेबल करना कुछ लोगों द्वारा उन्हें परमानंद मानने के तर्क के रूप में उपयोग किया गया है, लेकिन यह एक मजबूत तर्क नहीं है।

आइए सी के तहत 4 पर चलते हैं, जो है, “इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के बीच सबसे अधिक बार प्रदर्शित परमानंद व्यवहार का रूप दूरदर्शी अनुभव का है, न कि जंगली असामान्य व्यवहार का।” यदि आप यह कहने जा रहे हैं कि बाइबिल के पाठ में कुछ भी है जो इज़राइल के पैगंबरों के बीच परमानंद की घटनाओं की ओर इशारा करता है, तो आप जो पाएंगे वह दूरदर्शी स्थिति है, न कि जंगली, असामान्य या अनियमित व्यवहार। यह दर्शन दिव्य रहस्योद्घाटन का एक साधन था जो भविष्यवक्ताओं के पास अक्सर आता था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह कुछ भविष्यवक्ताओं के साथ दूसरों की तुलना में अधिक बड़ी भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, आप इसे यहजेकेल के साथ अक्सर पाते हैं। उनकी पुस्तक का पूरा दूसरा भाग एक भविष्य के मंदिर का दर्शन और उससे जुड़ी कई बातें हैं। आप इसे यिर्मयाह में बहुत कम पाते हैं। आप यशायाह में दूरदर्शी स्थितियों का बिखराव पाते हैं। इसलिए यह हर पैगम्बर से दूसरे पैगम्बर में भिन्न होता है। लेकिन पैगंबर के माध्यम से अपने लोगों तक ईश्वर के वचन को संप्रेषित करने का दूरदर्शी साधन कुछ ऐसा है जो बहुत आम है। अब, यदि आप मुख्यधारा के साहित्य को देखें तो उस संपूर्ण दूरदर्शी चीज़ पर उचित मात्रा में ध्यान दिया जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि यह केवल एक साहित्यिक उपकरण है और इसमें कोई वास्तविक ऐतिहासिक वास्तविकता नहीं है; यह ठीक उसी तरह है जैसे लेखक ने दिव्य रहस्योद्घाटन की धारणा को चित्रित किया है। अन्य लोग मनोवैज्ञानिक

दिशा में जाते हैं और कहते हैं कि ये वास्तव में मतिभ्रम हैं जो स्वयं भविष्यवक्ताओं के मानस से निकलते हैं। यदि आप इनमें से किसी भी दिशा में जाते हैं तो आप दूरदर्शी तरीकों से दिव्य रहस्योद्घाटन से इनकार कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि बाइबिल का पाठ हमें जो बता रहा है वह यह है कि ईश्वर ने भविष्यवक्ताओं को अपना संदेश संप्रेषित करने के लिए दर्शन का उपयोग किया था।

खैर, दर्शन क्या है? इसका वर्णन करना कठिन है, मुझे नहीं पता कि आपमें से किसी ने कोई सपना देखा है या नहीं। मेरे पास कभी नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि जागते हुए व्यक्ति को जो स्वप्न दिखाई देता है, वह स्वप्न तब होता है जब हम सो रहे होते हैं। हम सपने देखने से परिचित हैं। सपने बहुत वास्तविक हो सकते हैं—कभी-कभी बहुत वास्तविक भी। लेकिन एक दृष्टि वह व्यक्ति है जो जागृत अवस्था में है जहां वह किसी अन्य वास्तविकता में स्थानांतरित हो जाता है। वह चीजें देखता है, वह चीजें सुनता है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे वह वहां था। यशायाह 6 में, यशायाह भगवान के उस दर्शन को सेराफिम के साथ मंदिर में ऊंचे और ऊंचे स्थान पर देखता है, और सेराफिम वेदी से कटोरा लेता है। यशायाह ने होश नहीं खोया है क्योंकि संचार आगे-पीछे हो रहा है। उसने सामान्य चेतना नहीं खोई है बल्कि एक और वास्तविकता देखता है। ऑगस्टीन ने कहा कि हमारी चेतना का हास नहीं हुआ है, बल्कि चेतना को शारीरिक इंद्रियों से मुक्त कर दिया गया है, ताकि "ईश्वर जो दिखाना चाहता था वह दिखाया जा सके।" भविष्यवक्ता स्वयं को किसी अन्य आध्यात्मिक दुनिया में महसूस करते हैं, जिसमें वे आवाजें सुनते हैं और छवियां देखते हैं। उस दिन हमें जो कुछ मिला, उसका यह काफ़ी अच्छा वर्णन प्रतीत होता है। यदि आप इन भविष्यवक्ताओं में से किसी एक के बगल में खड़े होते तो आपने कुछ भी नहीं देखा या सुना होता—कम से कम मैं इसे इसी तरह समझता। लेकिन उन्होंने ऐसा किया और भगवान ने उनसे इस तरह से संवाद किया।

अब इज़राइल के पैगंबरों के साथ परमानंद की बात पर वापस आने के लिए, मुझे लगता है कि दिव्य रहस्योद्घाटन के इस दूरदर्शी रूप को "परमानंद" कहना स्वीकार्य है। इसके लिए कुछ बाइबिल आधार हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 10:10, जहां आपके पास पीटर का यह वर्णन है कि उसने स्वर्ग से एक चादर उतरते हुए देखा जिस पर शुद्ध और अशुद्ध जानवर हैं। आपने पढ़ा, "वह भूखा हो गया और कुछ खाना चाहता था और जब भोजन तैयार किया जा रहा था, तो वह

बेहोश हो गया।" यदि आप वहां के ग्रीक पाठ को देखें, तो "ट्रान्स" ग्रीक में *एक्स्टेसिस शब्द का अंग्रेजी अनुवाद है।* तो वह *परमानंद में था*. "उसने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, एक बड़ी चादर जैसी कोई चीज़ चारों कोनों से ज़मीन पर उतारी जा रही थी।" पीटर के उस दूरदर्शी अनुभव को *परमानंद* शब्द द्वारा वर्णित किया गया है।

प्रेरितों 22:17 में, पॉल के साथ भी हमारी यही बात है जहाँ वह एक दर्शन देखता है। और हम पढ़ते हैं, "जब मैं यरूशलेम लौटा और मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, तो मैं बेहोश हो गया।" वह फिर से *परमानंद है*। "और मैंने देखा," वहां की भाषा पर ध्यान दें, यह बिल्कुल भविष्यवक्ता की तरह है, "मैंने प्रभु को बोलते हुए देखा। 'जल्दी करो,' उसने मुझसे कहा, 'तुरंत यरूशलेम छोड़ दो क्योंकि वे मेरे बारे में तुम्हारी गवाही स्वीकार नहीं करेंगे।" यह पुराने नियम के दूरदर्शी अनुभव में हमें जो मिलता है, उसके समान ही लगता है। तो मुझे ऐसा लगता है कि हम दिव्य रहस्योद्घाटन को प्राप्त करने के इस दूरदर्शी साधन को "दूरदर्शी परमानंद" कह सकते हैं। यदि पुराने नियम में कुछ भी है जो यहूदी पैगम्बरों के बीच परमानंद की घटनाओं के माध्यम से बोलता है तो मुझे ऐसा लगता है कि यह एक दूरदर्शी अनुभव है, न कि जंगली या अनियमित व्यवहार।

आइए फिर रोमन अंक V पर चलते हैं, जो है, "भविष्यवक्ताओं का उपदेश।" मैं बस इस बारे में कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। हम कुछ औपचारिक विशेषताओं और फिर सामग्री की कुछ विशेषताओं को देखेंगे लेकिन यह सब बहुत सामान्य है। ए के अंतर्गत, "सामान्य टिप्पणियाँ," 1., "भविष्यवक्ता परमेश्वर के वचन के सबसे पहले और सबसे प्रमुख उद्घोषक थे।" भविष्यवक्ताओं को दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ, हाँ, लेकिन उन्हें इसे अपने तक ही सीमित रखने के लिए दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त नहीं हुआ। उन्होंने इसे अन्य लोगों को घोषित करने के लिए प्राप्त किया। उन्होंने ऐसा मुख्य रूप से उपदेश देकर किया। अतः भविष्यवक्ता काफी हद तक उपदेशक थे। अब हो सकता है कि कुछ सामग्री लिखी गई हो और लिखित रूप में प्रस्तुत की गई हो, लेकिन अधिकांश भाग में आप भविष्यवक्ताओं को सार्वजनिक मंचों पर जाकर उपदेश देते हुए और अपने समकालीनों को ईश्वर का संदेश देते हुए पाएंगे, चाहे वह किसी राजा के लिए हो या किसी अन्य के लिए। बड़े पैमाने पर लोग. भविष्यवाणी की किताबें काफी हद तक उनकी मौखिक उद्घोषणा का लिखित रिकॉर्ड हैं। हम रोमन अंक आठवीं के अंतर्गत उस पर वापस आने जा रहे हैं,

"भविष्यवाणी पुस्तकों की रचना-क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" हम उस प्रश्न के बारे में थोड़ा आगे बात करेंगे। लेकिन विहित पुस्तकें काफी हद तक उनकी मौखिक उद्घोषणा का लिखित रिकॉर्ड हैं। इस विचार का अभाव है कि उन्होंने अपने संदेश किसी प्रकार की आनंदमय स्थिति में दिए थे। उन्होंने अपना संदेश समझने योग्य भाषा में दिया और पाठ के संकेत से उन्होंने इसे बोलने या उपदेश देने के बहुत ही शांत और सामान्य तरीके से कहा। तथ्य यह है कि उन्हें दूसरों द्वारा अजीब माना जाता था, कभी-कभी उनके प्रतीकात्मक कृत्यों के कारण, कभी-कभी उनकी भावनात्मक अभिव्यक्तियों या किसी अन्य कारण से, यह कहने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं है कि वे परमानंद थे। लेकिन वे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर के वचन के उद्घोषक थे।

2. " भविष्यवक्ताओं का संदेश ईश्वर के रहस्योद्घाटन की एक विश्वसनीय घोषणा थी।" लेकिन, और यहां एक योग्यता है, इसकी प्रस्तुति के रूप में किसी व्यक्तिगत तत्व का बहिष्कार नहीं। तो रहस्योद्घाटन और उद्घोषणा के बीच क्या संबंध है? जब आप यह प्रश्न पूछते हैं, तो यह बहुत महत्वपूर्ण है कि रहस्योद्घाटन और उद्घोषणा के बीच कोई तनाव या विभाजन न रखा जाए। दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ताओं का उपदेश ईश्वर ने उन पर जो प्रकट किया उसका एक विश्वसनीय प्रतिनिधित्व था।

हालाँकि, और यहीं पर आपके हैंडआउट के बिंदु 2 पर योग्यता उत्पन्न होती है, संदेश के प्रतिनिधित्व में व्यक्तिगत भविष्यवक्ता का व्यक्तिगत तत्व नियोजित होता है। दूसरे शब्दों में, यदि आप यशायाह, यिर्मयाह, अमोस, ईजेकील के संदेशों को देखें और उद्घोषणा के रूप की तुलना करें तो आप पाएंगे कि भाषा, शैली, शब्दों की पसंद, व्यक्तित्व लक्षण, व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, कृषि बनाम हमारे बीच अंतर हैं। पौरोहित्य. यिर्मयाह के संदेश से यह स्पष्ट है कि वह आमोस से बहुत अलग व्यक्ति था। यिर्मयाह स्पष्ट रूप से एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति है, और यह उसके द्वारा दिए गए संदेशों से पता चलता है। यशायाह में आप यशायाह के आंतरिक व्यक्तित्व का बहुत कम या कुछ भी नहीं देखते हैं। तो आप विभिन्न पैगम्बरों के संदेशों की भाषा और शैली में अंतर देखते हैं जो पैगम्बरों के व्यक्तित्व से संबंधित हैं।

अब जब आप इसे देखते हैं, तो मुझे लगता है कि यहां एक रहस्य है और यह रहस्य है कि भगवान किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं, गुणों, पृष्ठभूमि और प्रभावित करने के विभिन्न

तरीकों को कैसे अपनाते हैं और उनका उपयोग अपनी उद्घोषणा में करते हैं। शब्द। आपको परमेश्वर के वचन की उद्घोषणा में परमात्मा और मानव का यह अंतर्संबंध मिलता है। तो यह मनुष्य का शब्द है लेकिन साथ ही यह भगवान का शब्द भी है। जहां कहीं भी आपको परमात्मा और मानव के बीच उस तरह का अंतर्संबंध मिलता है, आप एक रहस्य के सामने आ जाते हैं। हम पूरी तरह से यह नहीं समझा सकते कि यह कैसे काम करता है या यह कैसे काम करता है। आपके पास धर्मग्रंथ की प्रेरणा है जो वास्तव में भविष्यवक्ताओं की प्रेरणा के समान है क्योंकि धर्मग्रंथ ईश्वर का शब्द है, धर्मग्रंथ का लेखक ईश्वर के वचन की घोषणा कर रहा है, फिर भी उसका अपना व्यक्तित्व लेखन में सामने आता है। मुझे लगता है कि वोस इस बिंदु पर अच्छी तरह से चर्चा करता है। पृष्ठ सात पर उनके द्वारा लिखे गए एक निबंध के उद्धरण, जिसका शीर्षक है, "एक धार्मिक अनुशासन के रूप में बाइबिल धर्मशास्त्र और विज्ञान का विचार।" ध्यान दें कि वह क्या कहता है, पृष्ठ सात। वह कहते हैं, "क्योंकि, ईश्वर ने मानव उपकरणों के माध्यम से सत्य को प्रकट करने का निर्णय लिया है, इसका मतलब यह है कि ये उपकरण आम लक्ष्य के लिए असंख्य और विविध अनुकूलन वाले होने चाहिए। इसलिए, व्यक्तिगत रंग-रूप और प्रतिनिधित्व का एक अनोखा तरीका न केवल सत्य के पूर्ण बयान के लिए हानिकारक है, बल्कि सीधे तौर पर इसके अधीन है। ईश्वर के रहस्योद्घाटन की पद्धति में अपने स्वयं के उद्देश्य के लिए व्यक्तित्वों को आकार देना और तराशना शामिल है। इसे ठोस रूप से कहने के लिए: हमें इसकी कल्पना नहीं करनी चाहिए जैसे कि भगवान ने पॉल को 'तैयार' पाया, जैसा कि यह था, और रहस्योद्घाटन के एक अंग के रूप में पॉल का उपयोग करते हुए, इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ा कि पॉल का द्वंद्वत्मक दिमाग प्रतिबिंबित होता है सत्य को द्वंद्वत्मक, हठधर्मी रूप में सत्य की हानि के लिए। तथ्य ये हैं: सत्य, स्वाभाविक रूप से, अन्य पहलुओं के अलावा, एक द्वंद्वत्मक और हठधर्मिता पक्ष है, और भगवान ने इस पक्ष को पूर्ण अभिव्यक्ति देने का इरादा किया, पॉल को गर्भ से चुना, उसके चरित्र को ढाला, और उसे ऐसा प्रशिक्षण दिया कि सत्य उनके माध्यम से जो खुलासा हुआ, वह अनिवार्य रूप से उनके दिमाग पर हठधर्मिता और द्वंद्वत्मक प्रभाव डालता है। और फिर अगला भाग है, "यहाँ दैवीय निष्पक्षता और मानवीय व्यक्तित्व न तो टकराते हैं और न ही एक-दूसरे को बाहर करते हैं, क्योंकि पॉल नाम का व्यक्ति, अपने पूरे चरित्र, अपने उपहारों और अपने प्रशिक्षण के साथ, दैवीय योजना के अंतर्गत समाहित है।" दूसरे शब्दों में,

ईश्वर ने ठीक उसी प्रकार के व्यक्ति और मन को पहले से तैयार किया था जिसे वह चाहता था ताकि उसके माध्यम से कोई विशेष संदेश दिया जा सके। और पॉल के मामले में, उनका द्वंद्वत्मक और तार्किक दिमाग उनके कुछ लेखों में तार्किक वाक्य उत्पन्न कर सकता है। खैर, यह परमेश्वर का उद्देश्य है कि उसका वचन उस प्रकार का हो जैसा उसने व्यक्ति को करने के लिए तैयार किया है। "मानव केवल वह कांच है जिसके माध्यम से दिव्य प्रकाश प्रतिबिंबित होता है, और जिन सभी पक्षों और कोणों में इस कांच को काटा गया है, वे इसके प्रिज्मीय रंगों के सभी धन में सत्य को हमें वितरित करने के अलावा और कोई उद्देश्य नहीं रखते हैं।" अब इसे अक्सर "प्रेरणा का जैविक दृष्टिकोण" कहा जाता है, जहां इस मानव व्यक्ति को इस प्रक्रिया में शामिल किया जाता है और संदेश के निर्माण में भगवान द्वारा इसका उपयोग या नियोजित किया जाता है।

आप में से कुछ लोग संभवतः नीदरलैंड के धर्मशास्त्री जीसी बर्कौवर से परिचित हैं। उन्होंने *स्टडीज ऑफ़ डॉगमैटिक्स* नामक सिद्धांत और खंड लिखे, जिसे वह उस समय लिख रहे थे जब मैं 1960 के दशक में नीदरलैंड में अध्ययन कर रहा था। वह बहुत अच्छे विद्वान हैं। वह इस प्रश्न के बारे में कुछ दिलचस्प बातें कहते हैं और समय के साथ पवित्रशास्त्र के बारे में उनका दृष्टिकोण कैसे बदल गया। कुछ लोगों ने प्रारंभिक बर्कौवर और बाद के बर्कौवर के बारे में बात की है लेकिन प्रारंभिक बर्कौवर ने इस प्रश्न पर इस तरह से बात की है। उन्होंने कहा, "आप रहस्य को कहां रखते हैं?" और यदि आप शुरुआती बर्कौवर से यह प्रश्न पूछते हैं, "एक शब्द भगवान का शब्द और मनुष्य का शब्द दोनों कैसे हो सकता है?" बर्कौवर का कहना है कि रहस्य भगवान की आत्मा और मानव चेतना के बीच काम करने की प्रकृति में है, दिव्य और मानव का प्रतिच्छेदन ताकि मानव व्यक्तित्व को भगवान के शब्द की उद्घोषणा में ले जाया जा सके। वहाँ रहस्य है। वह वास्तव में कैसे काम करता है? मुझे लगता है कि रहस्य को यहीं रखा जाना चाहिए और इसे वहीं छोड़ देना चाहिए। यदि आप पवित्रशास्त्र की सभी विशिष्टताओं को देखें, "मैं अपने शब्द तुम्हारे मुँह में डालूँगा," तो ऐसा प्रतीत होता है कि उद्घोषणा मानव व्यक्तित्व में है। परिणाम यह है कि मानवीय मध्यस्थता के बावजूद धर्मग्रंथ ईश्वर का अचूक शब्द बना हुआ है। क्योंकि यह ईश्वर का शब्द है और यह ईश्वर का अचूक शब्द रहता है।

बाद के बर्कौवर ने उस प्रश्न का फिर से उत्तर दिया - "मानव शब्द एक ही समय में भगवान

का शब्द कैसे हो सकता है?" - लेकिन रहस्य को एक अलग बिंदु पर रखता है। बाद के बर्कौवर में, सवाल यह है कि मानव शब्द कैसे हो सकता है - जो, क्योंकि यह मानव है, आवश्यक रूप से गलत है - एक मानव शब्द और इसलिए एक गलत शब्द, एक ही समय में भगवान का शब्द कैसे हो सकता है? बाद के बर्कौवर में, रहस्य यह है कि एक गलत मानवीय शब्द के लिए एक ही समय में भगवान का शब्द होना और दिव्य सत्य को व्यक्त करना कैसे संभव है। अब ऐसा लग सकता है जैसे मैं बड़बड़ा रहा हूँ। लेकिन बाद के बर्कौवर ने कहा, धर्मग्रंथ त्रुटिहीन नहीं है बल्कि यह ईश्वर का वचन है। ऐसा होना अनेक समस्याओं को जन्म देता है। हम यह कहकर यह पता लगाने की कोशिश करने लगते हैं कि कौन सा शब्द बेहतर है, कौन सा विश्वसनीय है और कौन सा नहीं। तो यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है लेकिन यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है जब आप भविष्यसूचक लेखन को देखते हैं तो वहां व्यक्तित्व भिन्न होते हैं। जिस तरह से संदेश तैयार किया गया है वह उसे प्रतिबिंबित करता है, लेकिन यह भगवान का शब्द ही रहता है।

आइए बी पर चलते हैं, "भविष्यवाणी उद्घोषणा की कुछ औपचारिक विशेषताएं।" और 11 है, "संदेश प्रत्यक्ष और सजीव हैं-अमूर्त और शुष्क नहीं।" जब आप भविष्यवाणी की किताबें पढ़ते हैं, तो आप पाते हैं कि भविष्यवक्ता आए और उन्होंने अपने दर्शकों से ज्वलंत, सशक्त और शक्तिशाली तरीके से बात की। वे अमूर्त, शुष्क, सैद्धांतिक, औपचारिक व्याख्यान नहीं हैं। मैं आपको केवल कुछ उदाहरण देता हूँ: यिर्मयाह 7 इसे स्पष्ट करने के लिए एक अच्छा अध्याय है। इसे अक्सर *यिर्मयाह का मंदिर उपदेश कहा जाता है*। आप पहले पद में यिर्मयाह 7 के संदर्भ को देखें, "यह वह वचन है जो प्रभु की ओर से यिर्मयाह के पास आया: 'प्रभु के घर के द्वार पर खड़े हो जाओ और वहां इस संदेश का प्रचार करो।'" प्रभु ने यिर्मयाह को बाहर जाने के लिए कहा। और मन्दिर के फाटक पर उसे ढूँढ़ो, और यह सन्देश दो, कि हे सब यहूदा के लोगो, तुम जो यहोवा को दण्डवत् करने के लिये इन फाटकों से होकर आते हो, यहोवा का वचन सुनो। सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यह कहता है: अपने चालचलन और काम सुधारो, और मैं तुम्हें इस स्थान में रहने दूंगा। भ्रामक शब्दों पर भरोसा मत करो और कहो, 'यह भगवान का मंदिर है, भगवान का मंदिर, भगवान का मंदिर!' यदि तुम सचमुच अपनी चाल-चलन और काम-काज बदलो, और एक दूसरे के साथ न्याय से व्यवहार करो, यदि तुम परदेशी, अनाथ, वा विधवा पर अन्धेर न करो, और

इस स्थान में निर्दोष का खून न बहाओ, और यदि तुम अपने देवताओं के पीछे दूसरे देवताओं का अनुसरण न करो। हानि उठाओ, तो मैं तुम को इस स्थान में, इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिया था, सदा सर्वदा के लिये रहने दूंगा। परन्तु देखो, तुम व्यर्थ की भ्रामक बातों पर भरोसा रखते हो। क्या तुम चोरी करोगे और हत्या करोगे, व्यभिचार करोगे और झूठी गवाही दोगे, बाल के लिये धूप जलाओगे और अन्य देवताओं के पीछे चलोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, और फिर आकर इस भवन में, जिस पर मेरा नाम है, मेरे साम्हने खड़े होकर कहोगे, 'हम सुरक्षित हैं—सुरक्षित हैं। ये सब धिनौने काम करते हो?' क्या यह घर जिस पर मेरा नाम है, तुम्हारे लिये डाकुओं का अड्डा बन गया है? लेकिन मैं देखता रहा हूं!' प्रभु की घोषणा है। अब शीलो के उस स्थान पर जाओ, जहां मैं ने पहिले आपके नाम के लिथे निवास बनाया, और देखो कि अपक्की प्रजा इस्राएल की दुष्टता के कारण मैं ने उसका क्या हाल किया है। शमूएल के नगर का यही हाल हुआ और उन्होंने उसके तम्बू को नष्ट कर दिया। "यहोवा की यह वाणी है, कि जब तुम ये सब काम कर रहे थे, तब मैं ने तुम से बारंबार कहा, परन्तु तुम ने न सुनी; मैंने तुम्हें फोन किया, लेकिन तुमने जवाब नहीं दिया। इसलिये जो मैं ने शीलो से किया, वैसा ही अब उस भवन से भी करूंगा जिस पर मेरा नाम है, अर्थात् जिस मन्दिर पर तू ने भरोसा किया, और जो स्थान मैं ने तुझे और तेरे पुरखाओं को दिया है, वैसा ही मैं ने तुझ को अपने साम्हने से दूर कर दूंगा, जैसा मैं ने तेरे सब भाइयोंके साय किया है। इस्राएली, एप्रैम के लोग।" तो यहाँ वह मंदिर के द्वार पर खड़ा होकर कह रहा है, "यह मंदिर नष्ट होने वाला है।" मन्दिर वह है जिसकी इस्राएली महिमा करते थे। यह उनके बीच में परमेश्वर का निवास था। वे इन सभी अनुष्ठानों से गुज़रे, लेकिन उनका जीवन कुछ और ही कहानी कह रहा था। जैसा कि कहा गया है, वे अन्य देवताओं का अनुसरण करते हुए बाल के लिये धूप जला रहे थे। अब यह एक शक्तिशाली संदेश है, और पैगम्बरों की यह विशेषता है कि वे इस तरह सशक्त तरीके से संदेश देते हैं - अमूर्त और शुष्क व्याख्यान नहीं।

हम कई अन्य उदाहरण देख सकते हैं, लेकिन मैं ऐसा करने में समय नहीं लगाऊंगा। यह जोएल 2 की भाषा है जहाँ टिट्टियों की महामारी का वर्णन है। यह वास्तव में वर्णनात्मक और बहुत सुंदर मार्ग है। लेकिन यह आने वाले फैसले का एक अंश है। टिट्टियाँ दुनिया के आने वाले फैसले का प्रतीक थीं। अश्शूर की राजधानी नीनवे पर आने वाले न्याय के वर्णन के साथ नहूम को देखें।

इसलिए संदेश प्रत्यक्ष हैं, अमूर्त और शुष्क नहीं।

2. है, "भविष्यवक्ता अक्सर अपनी बात मनवाने के लिए शब्दों का सहारा लेते थे।" भविष्यवाणी की पुस्तकों में इसके बारे में बहुत कुछ है, यदि आप केवल अंग्रेजी पाठों को देखते तो शायद आपको इसके बारे में पता होता क्योंकि यदि आप एक भाषा से अनुवाद करने का प्रयास कर रहे हैं तो शब्दों पर नाटक करना सबसे कठिन चीजों में से एक है जिससे आप निपट सकते हैं। दूसरे करने के लिए। और शब्दों के खेल को ग्राही भाषा में ले जाना अक्सर असंभव होता है।

मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ। यह यशायाह 5:7 है, जिसमें यदि आप वहां के इब्रानी भाषा को देखें, तो आप पाएंगे, "और उस ने न्याय की बाट जोही, परन्तु खून-खराबा देखा।" आप *मिशपत* के साथ शब्दों का खेल देखें और *मिस्पोक*, ध्वनि में लगभग समान हैं, लेकिन आप इसे अनुवाद में कैसे ले जाते हैं? लेकिन फिर वहां दूसरा वाक्यांश, उसने धार्मिकता की तलाश की, *लेसेडेका*, लेकिन देखो एक संकट का रोना, *सदक*। उनमें से दो आपको उस श्लोक में मिलते हैं। इस तरह के शब्दों का नाटक उस मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करने का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है जो कहा जा रहा है। इसलिए यह कथन की ताकत और प्रभावशीलता को बढ़ाता है, लेकिन अनुवाद में इसे पकड़ना मुश्किल है।

एनआईवी में यशायाह 7:9 को देखें, "यदि आप अपने विश्वास में दृढ़ नहीं हैं तो आप बिल्कुल भी खड़े नहीं रह पाएंगे।" वहां उन्होंने शब्दों के उस खेल का कुछ अंश कैद किया है जो हमने वहां सुना था। जहां तक इसके मूल अर्थ की बात है तो आमीन का अर्थ "पुष्टि करना" या "समर्थन करना" है / हिफिल स्टेम में इसका अर्थ है "विश्वास" या "विश्वास।" निफल तने में इसका अर्थ है "पुष्टि करना" या "स्थापित करना"। तो आपको हिफिल और निफाल के बीच अंतर मिलता है और आपको विश्वास करने का विचार स्थापित होता है। लेकिन जब आप इसे हिब्रू में पढ़ते हैं तो आपको ध्वनि में वह समानता नहीं मिलती जो आपको मिलती है।

मैं आपको एक और उदाहरण देता हूँ। यह एक पाठ्य समस्या है जो पाठ्य समस्या के साथ-साथ शब्दों के प्रयोग का एक संयोजन है। यदि आप यिर्मयाह 23:33 को देखें - जो वास्तव में सेप्टुआजेंट और वुलोट का अनुसरण करता है, जो मुझे लगता है कि यहां बेहतर हैं - मैसोरेटिक पाठ से। मैं एक मिनट में सेप्टुआजेंट पाठ पर वापस आऊंगा। लेकिन यदि आप मैसोरेटिक पाठ का

अनुसरण करते हैं तो अनुवाद होगा, "जब इनमें से कोई व्यक्ति या भविष्यवक्ता या पुजारी आपसे पूछता है, 'प्रभु का बोझ क्या है?' तब तू उन से कहेगा, 'तुम ही बोझ हो।' शासक कहता है, 'और मैं तुम्हें त्याग दूँगा।' अब वहाँ शब्दों पर एक खेल है और शब्दों पर खेल *मस्सा शब्द के साथ है जिसे* आप हिब्रू पंक्ति में अंतिम शब्द देखते हैं। यदि आप वहाँ प्रारंभ में देखें तो वहाँ *मस्सा शब्द है*। प्रभु का भार क्या है? *मस्सा* एक ऐसा शब्द है जिसका दोहरा अर्थ होता है। इसका अर्थ "बोझ" हो सकता है या इसका अर्थ "दैवज्ञ" हो सकता है। सो, जब लोगों, भविष्यवक्ताओं या याजकों में से कोई तुम से कहता है, प्रभु का बोझ क्या है? प्रभु का दैवज्ञ या संदेश क्या है? तब तू उन से कहेगा, तुम यहोवा के बोझ हो। संदेश के अर्थ में नहीं बल्कि अपनी पीठ पर बोझ के अर्थ में। आप देखिए, *मस्सा* शब्द के दोहरे अर्थ पर एक नाटक है। मुझे लगता है कि पाठ को इसी तरह पढ़ा जाना चाहिए। यह सेप्टुआजेंट द्वारा पूर्वकल्पित हिब्रू पाठ है। प्रभु का भार क्या है? तुम बोझ हो। यदि आपने एनआईवी और किंग जेम्स को देखा, "प्रभु का बोझ क्या है? तू कहेगा, उनके नीचे कैसा बोझ?" मैसोरेटिक पाठ इसी प्रकार पढ़ा जाता है। "प्रभु का बोझ क्या है? हम उनसे कहेंगे, कैसा बोझ?" अब आप देखिए कि यहाँ क्या हुआ है? सवाल यह है कि आप शब्दों को कहां बांटते हैं? क्या आप *ताव के बाद भाग करते हैं* और *मेम को प्रश्नवाचक 'ही' के साथ रखते हैं* या आप इसे *'ही के बाद विभाजित करते हैं'* मुझे ऐसा लगता है कि सेप्टुआजेंट ने शब्दों के खेल को कहीं बेहतर तरीके से रखा है। यह कहना कि "कौन सा बोझ" उतना अच्छा नहीं बैठता जितना "आप बोझ हैं।"

मैं आपको शब्दों के इस खेल का एक और उदाहरण देता हूँ। यिर्मयाह 1:11 कहता है, "प्रभु का यह वचन मेरे पास आया: 'यिर्मयाह तुम क्या देखते हो?' मैंने उत्तर दिया, 'मुझे बादाम के पेड़ की शाखा दिख रही है।' बादाम का पेड़ *हिल गया है। 'मैं बादाम के पेड़* की शाखा देख रहा हूँ। भगवान ने मुझसे कहा, 'तुमने सही देखा है क्योंकि मैं यह देखने के लिए **देख रहा हूँ** कि मेरा वचन पूरा हो गया है।' देखना *हैरान है*।

तो हमने *हिलाया* और *हिलाया है*। हम इसे अनुवाद में नहीं पकड़ सकते लेकिन यह शब्दों का खेल है। *Shoqed* एक क्रिया है जिसका अर्थ है "देखना" या "इंतज़ार करना" और *shaqed* [बादाम का पेड़] उस मूल से लिया गया है। इसे सर्दियों की नींद से जल्दी जागने के कारण ही कहा जाता है कि यह जल्दी फूलने वाला पेड़ है। लेकिन जहाँ तक व्युत्पत्ति का सवाल है तो आपको शब्दों का

हिलाकर रख देने वाला खेल मिलता है और यह कुछ ऐसा है जो भविष्यसूचक प्रवचन में काफी सामान्य है।

तीसरा, यह महज़ एक साहित्यिक तकनीक है, जो बात आप कह रहे हैं उसे अधिक प्रभावी, सशक्त तरीके से कहने का एक तरीका या साधन है। मैं उस तरह की चीज़ में अच्छा नहीं हूँ; ऐसे लेखक और भाषण देने वाले हैं जिनके पास ऐसा करने की चतुर क्षमता है। यदि आप इसे सही ढंग से कर सकते हैं तो यह बोलने का एक सशक्त तरीका है। यह मेरा अगला बिंदु है, बहुत से भविष्यवक्ताओं ने काव्यात्मक रूप में लिखा है और काव्यात्मक भाषा अक्सर एक शब्द पर आधारित होती है। एमस्टर्डम में फ्री यूनिवर्सिटी में जहाँ मैंने डॉक्टरेट की उपाधि ली, वहाँ एक दार्शनिक थे, जो दार्शनिक मुद्दे उठाने के लिए हर समय नाटकों में शब्दों पर बात करते थे। उसने स्वाभाविक रूप से ऐसा किया।

3. है, "भविष्यवक्ता अक्सर काव्यात्मक अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं।" भविष्यवाणी पुस्तकों के महान भाग हिब्रू कविता में हैं। आप इसे केवल यशायाह को खोलकर देख सकते हैं, या यदि मैं इस पृष्ठ को खोलता हूँ तो आप टाइपसेट को इंगित करते हुए देख सकते हैं कि यह कब गद्य है। लेकिन जब आप यशायाह को पढ़ते हैं तो आप देखते हैं कि अधिकांश पुस्तक काव्यात्मक रूप में है। कुछ पुराने अनुवाद जो टाइपसेट में दिखाई नहीं देते थे, उन अनुवादों को पढ़ने से आपको पता नहीं चलेगा कि आप कविता पढ़ रहे थे या गद्य। नए अनुवादों से संकेत मिलता है कि यह गद्य की तरह अनुच्छेदों के बजाय पंक्ति दर पंक्ति टाइपसेट है।

हिब्रू कविता समानताओं की विशेषता है। ये समानांतर रेखाएँ समानार्थी समानता, प्रतिपक्षी समानता या सिंथेटिक समानता हो सकती हैं। ये तीन मुख्य प्रकार हैं। पर्यायवाची में आपको दो पंक्तियाँ मिलती हैं जो अलग-अलग शब्दों के साथ लगभग एक ही बात कहती हैं। विपरीत में, आपको दो पंक्तियाँ मिलती हैं जहाँ पहली एक बात कहती है और दूसरी विपरीत कहती है। सिंथेटिक में, कभी-कभी दोनों के बीच एक इमारत होती है। उनके बीच की रेखाएँ खींचना कभी-कभी कठिन होता है लेकिन यह स्पष्ट है कि हिब्रू कविता समानांतर रेखाओं पर बनी है।

यशायाह 2:2 को देखें, "अन्तिम दिनों में, प्रभु के मन्दिर का पर्वत स्थापित किया जाएगा," और फिर समानांतर वाक्यांश, जो वास्तव में उस पर बनता है, "पहाड़ों में प्रमुख के रूप में।" और

फिर अगला वाक्यांश, "यह पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा," और समानांतर, "सभी राष्ट्र इसकी ओर प्रवाहित होंगे।" "बहुत से लोग आएंगे और कहेंगे, आओ, हम प्रभु के पर्वत पर चलें।" और समानांतर वाक्यांश, "याकूब के परमेश्वर के घर तक।" "वह हमें अपने तरीके सिखाएगा," समानांतर वाक्यांश, "ताकि हम उसके पथों पर चल सकें।" "कानून सियोन से निकलेगा," समानांतर वाक्यांश, "यरूशलेम से प्रभु का वचन।" देखिए, यह उसी तरह चलता रहता है। यह अधिकांश भविष्यवाणी प्रवचनों की विशेषता है।

चौथा, सभी भविष्यवक्ता कल्पना या आलंकारिक भाषा का उपयोग करते हैं। अब जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, कल्पना, आलंकारिक भाषा अक्सर काव्यात्मक अभिव्यक्ति की विशेषता होती है। यशायाह 28 को देखें। पहले चार छंदों में, यशायाह कहता है, "धक्कार है उस माला पर, एप्रैम के शराबियों के गौरव पर, मुरझाते फूल पर, उसकी शानदार सुंदरता पर, उपजाऊ घाटी के सिर पर स्थापित - उस शहर पर, गौरव पर उन लोगों में से जो शराब के नशे में डूबे हुए हैं! देख, प्रभु के पास एक है जो सामर्थी और सामर्थी है। वह उसे ओलों और विनाशकारी आँधी की नाई, मूसलाधार वर्षा और बाढ़ की नाई बलपूर्वक भूमि पर फेंक देगा। वह माला, एप्रैम के पियक्कड़ों का घमण्ड, पैरों तले रौंदा जाएगा। वह मुरझाता फूल, उसकी शानदार सुंदरता, उपजाऊ घाटी के सिर पर स्थापित, फसल से पहले पके हुए अंजीर की तरह होगा - जैसे ही कोई इसे देखता है और इसे अपने हाथ में लेता है, वह इसे निगल लेता है। अब वह किस बारे में बात कर रहा है? यह कौन सी पुष्पांजलि है जो एप्रैम के शराबियों का गौरव है जो विनाश की इस ओलावृष्टि के माध्यम से जमीन पर गिरा दी जाएगी? यह आलंकारिक भाषा है, जो उत्तरी साम्राज्य की राजधानी सामरिया का वर्णन करती है। सामरिया पुष्पमाला है, एप्रैम के पियक्कड़ों का घमण्ड है; "एक उपजाऊ घाटी के सिर पर स्थापित, शहर के लिए, शराब से कुचले हुए लोगों का गौरव। देखो प्रभु वह है जो शक्तिशाली और मजबूत है। ओलावृष्टि और विनाशक आँधी की तरह, भारी बारिश और बाढ़ की तरह" - यह अशशूर है जो आकर सामरिया को नष्ट कर देगा। अशशूर विनाश की वह ओलावृष्टि है। सामरिया को पैरों तले रौंदा जाएगा। अब वहां की आलंकारिक भाषा काफी स्पष्ट है, कभी-कभी यह समझना अधिक कठिन होता है कि वास्तव में आकृति क्या दर्शाती है। कभी-कभी यह जानना मुश्किल होता है कि किसी अनुच्छेद को आलंकारिक रूप से लिया जाना है या शाब्दिक

रूप से। हमें इसे सुलझाना होगा और उन कारणों पर गौर करना होगा कि क्यों हो सकता है कि आपने इसे शाब्दिक रूप से पढ़ा हो और हो सकता है कि आपने इसे आलंकारिक रूप से पढ़ा हो। यह बहुत जटिल हो सकता है।

चित्र का एक और स्पष्ट उदाहरण यशायाह 5, "दाख की बारी का गीत" है, जहां आप पढ़ते हैं, "मैं जिसे प्यार करता हूँ उसके लिए उसके अंगूर के बगीचे के बारे में एक गीत गाऊंगा: मेरे प्रियजन के पास एक उपजाऊ पहाड़ी पर एक अंगूर का बगीचा था। उसने इसे खोदा और इसमें से पत्थर साफ किये और इसमें सबसे अच्छी लताएँ लगाईं। उसने उसमें एक प्रहरीदुर्ग बनाया और एक शराब का कुण्ड भी कटवाया। फिर उसने अच्छे अंगूरों की फ़सल की तलाश की, लेकिन उसका फल खराब ही निकला। अब हे यरूशलेम के निवासियों, हे यहूदा के मनुष्यों, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो। मैंने अपने अंगूर के बगीचे के लिए जितना किया है, उससे अधिक और क्या किया जा सकता था? जब मैं अच्छे अंगूरों की तलाश में था, तो खराब अंगूर ही क्यों मिले? अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं अपने अंगूर के बगीचे के साथ क्या करने जा रहा हूँ: मैं उसकी बाड़ को हटा दूंगा, और वह नष्ट हो जाएगा; मैं उसकी शहरपनाह तोड़ डालूँगा, और वह रौंदा जाएगा। मैं उसे बंजर भूमि बना दूंगा, जो न तो काटी जाएगी, न खेती की जाएगी, और वहां झाड़ियाँ और कांटे उगेंगे। मैं बादलों को आज्ञा दूँगा कि उस पर वर्षा न करें।" और फिर आपको एक स्पष्टीकरण मिलेगा। यह आकृति किस बारे में है? यह एक विस्तारित आकृति है, लगभग एक रूपक। हाँ, पद 7 में, "सर्वशक्तिमान यहोवा की दाख की बारी है इस्राएल का घराना, और यहूदा के लोग उसकी प्रसन्नता की बारी हैं।" और फिर आपको वह आयत मिलती है जिसे हमने पहले देखा था, इसमें शब्दों का वह खेल है, "और उसने **न्याय की आशा की** [मिशपत], लेकिन **खून-खराबा देखा** [मिशपोह]; **धार्मिकता के लिए** [सदका], लेकिन **संकट की चीखें सुनीं** [साकाह] ।।" इसलिए, भविष्यसूचक प्रवचन में बहुत सारी कल्पना और आलंकारिक भाषा है।

मैं आपको एक और विस्तारित विवरण देता हूँ, और वह यहेजकेल 27 है, जहां आपके पास सोर शहर का वर्णन है, जो एक व्यापारिक शहर था। इसे यहेजकेल 27 में समुद्र में एक व्यापारी जहाज के रूप में चित्रित किया गया है। तो आप पहले पद में पढ़ते हैं, "यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा: हे मनुष्य के सन्तान, सोर के विषय में विलाप का गीत गाओ। सोर जो समुद्र के द्वार पर

स्थित है, और अनेक तटों के लोगों का व्यापारी है, उस से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, तू कहता है, हे सोर, मैं सुन्दरता में परिपूर्ण हूँ। आपका अधिकार क्षेत्र ऊँचे समुद्र पर था; आपके बिल्डरों ने आपकी सुंदरता को पूर्णता तक पहुंचाया। उन्होंने तेरी सब लकड़ियाँ सनीर के देवदार के वृक्षों की बनाई; वे आपके लिए मस्तूल बनाने के लिए लेबनान से एक देवदार ले आए।" तो यहाँ जहाज के रूप में इस शहर की यह तस्वीर है। "उन्होंने बाशान के बांज वृक्षों से तुम्हारे चप्पू बनाए; उन्होंने तेरा डेक साइप्रस के तटों से प्राप्त सरू की लकड़ी से, हाथी दांत से जड़ा हुआ बनाया। मिस्र से बढ़िया कढ़ाई किया हुआ सनी का कपड़ा तुम्हारे पाल का काम करता था, और तुम्हारे झण्डे का काम करता था; तुम्हारे शामियाने एलीशा के तटों से नीले और बैंगनी रंग के थे। परन्तु पुरवाई तुम्हें समुद्र के बीच में टुकड़े टुकड़े कर डालेगी। आपका धन, माल और माल, आपके नाविक, नाविक और जहाज बनाने वाले, आपके व्यापारी और आपके सभी सैनिक, और जहाज पर सवार बाकी सभी लोग आपके जहाज़ डूबने के दिन समुद्र के बीच में डूब जायेंगे। जब तेरे नाविक चिल्लाएंगे तो तट काँप उठेंगे। जितने चप्पू संभालते हैं वे सब अपने जहाज छोड़ देंगे; मल्लाह और सब मल्लाह किनारे पर खड़े रहेंगे। वे तेरे कारण ऊँचे शब्द से चिल्लाएंगे, और फूट-फूटकर रोएंगे; वे अपने सिरों पर धूल छिड़केंगे और राख में लोटेंगे।" पद 32 जारी है, "जब वे तुम्हारे लिए विलाप करेंगे और विलाप करेंगे, तो वे तुम्हारे विषय में विलाप करेंगे: "सोर के समान कौन कभी चुप रहा, जो समुद्र से घिरा हुआ था? " जब तेरा माल समुद्र के पार चला गया, तब तू ने बहुत सी जातियोंको तृप्त किया; अपने अपार धन के साथ. अब तुम समुद्र की गहराइयों में डूबकर चकनाचूर हो गए हो।" इसलिए, सोर शहर पर न्याय आने वाला है। यह तस्वीरें हैं; यह कल्पना एक व्यापारिक जहाज की काव्यात्मक और आलंकारिक दोनों है। ये काव्य लेखन की कुछ औपचारिक विशेषताएँ हैं।

आइए सी पर चलते हैं, "भविष्यवाणी लेखन की सामग्री की कुछ विशेषताएं" मेरे यहां दो उप-बिंदु हैं। एक, "पैगंबर कोई नया धर्म या नैतिकता नहीं लाते हैं।" तो सबसे पहले, कुछ ऐसा जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण है - विशेष रूप से उन दृष्टिकोणों में जिनकी कई लोगों ने वकालत की है कि पैगंबर इज़राइल में महान धार्मिक नवप्रवर्तक हैं - आपको शुरू से ही समझना होगा; पैगंबरों ने कोई नया धर्म शुरू नहीं किया या उसका पालन नहीं किया। भविष्यवाणी संदेश नई धार्मिक अवधारणाओं से अलग नहीं है। भविष्यवक्ताओं का प्राथमिक जोर

भगवान के लोगों को मोक्ष की ओर वापस बुलाने पर है, और जो कुछ भगवान ने पहले प्रकट किया है उस पर वापस बुलाने पर है। उन्होंने इज़राइल को ईश्वर की वाचा के लोगों के रूप में अपने दायित्वों के लिए वापस बुलाया, वह वाचा जो मूसा के नेतृत्व में सिनाई पर्वत पर स्थापित की गई थी। वह वाचा इस बात का आधार थी कि इस्राएल को एक व्यक्ति के रूप में कैसा होना चाहिए। तो आप पाएंगे कि भविष्यवक्ता, काफी हद तक, इज़राइल को उस वाचा के प्रति वफादार रहने के लिए कह रहे हैं। यह नवप्रवर्तन नहीं है, यह अधिक सुधार है। फिर भी आपको पहले से प्रकट धार्मिक अवधारणाओं में कुछ गहराई और आगे का विकास मिलता है, निश्चित रूप से मुक्ति के इतिहास की प्रगति स्पष्ट हो जाती है क्योंकि भविष्यवक्ता भविष्य में भगवान के शब्द बोलना शुरू करते हैं कि भगवान अपने मुक्ति के उद्देश्यों के साथ कहां और कब जाना चाहते हैं। आप रहस्योद्घाटन की प्रगति के बारे में बात कर सकते हैं लेकिन आवश्यक परिवर्तन के बारे में नहीं। इसलिए पैगंबर इज़राइल में महान धार्मिक नवप्रवर्तक नहीं थे, जिन्होंने, जैसा कि कई लोगों ने आरोप लगाया है, नैतिक एकेश्वरवाद के विचार को स्थापित किया।

वेलहाउज़ेन ने कानून और भविष्यवक्ताओं की भूमिका को उलट दिया और भविष्यवक्ताओं को पहले और कानून को दूसरे स्थान पर रखा। उनका मानना था कि भविष्यवक्ता धार्मिक नवप्रवर्तक थे जिन्होंने नैतिक एकेश्वरवाद का विचार बनाया। हालाँकि, बाइबल स्वयं इसके बिल्कुल विपरीत है। मूसा ने सिनाई पर्वत पर वाचा के स्पष्टीकरण की नींव रखी, और यह भविष्यवक्ता ही थे जिन्होंने लोगों को उस धारणा पर वापस बुलाया।

दूसरे, "भविष्यवक्ताओं का संदेश चार क्षेत्रों में केंद्रित है," और मैंने ए, बी, सी और डी में सामग्री की चार व्यापक श्रेणियां सूचीबद्ध की हैं: ए। धार्मिक या धार्मिक है, बी. नैतिकता या सामाजिक रिश्ते हैं, सी। राजनीतिक मुद्दे हैं, और डी. युगांतशास्त्र और मसीहाई अपेक्षा है। वे सभी चीजें आपस में जुड़ी हुई हैं, लेकिन मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं को जो कुछ कहना था, उनमें से अधिकांश को उनमें से एक के अंतर्गत रखा जा सकता है जहां तक कि वे जो कह रहे थे उसके प्राथमिक जोर या फोकस की बात है। तो मुझे उनमें से प्रत्येक के बारे में बस कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए।

"धार्मिक या धार्मिक" में ईश्वर और उसके लोगों के साथ ईश्वर के संबंध के बारे में शिक्षा

शामिल होगी। इसमें मूर्तिपूजा और झूठी पूजा के खिलाफ चेतावनियां शामिल होंगी, साथ ही धार्मिक औपचारिकता के खिलाफ चेतावनियां भी शामिल होंगी, अनुष्ठान से गुजरना लेकिन जीवन नहीं जीना। इज़राइल में बहुत कुछ चल रहा था; यह भविष्यवक्ताओं का एक प्रमुख फोकस था।

जहां तक ईश्वर के बारे में सामान्य शिक्षा की बात है, तो एकेश्वरवाद पर जोर दिया जाता है - ईश्वर केवल एक ही है। यशायाह 45:4-5 को देखें, जहां यशायाह कहता है, "अपने सेवक याकूब के लिए, अपने चुने हुए इस्राएल के लिए, मैं तुम्हें नाम लेकर बुलाता हूं" और यह फारस के शासक साइरस के बारे में बात कर रहा है, "और तुम्हें एक उपाधि प्रदान करता हूं" आदर की बात है, यद्यपि तुम मुझे स्वीकार नहीं करते, तौभी मैं यहोवा हूं, और कोई दूसरा नहीं। मेरे अलावा कोई भगवान नहीं है।" यह एकेश्वरवाद का सीधा-सीधा कथन है।

यदि आप यशायाह 18:45 में जाते हैं तो आप पढ़ते हैं, "क्योंकि यहोवा यों कहता है, जिस ने स्वर्ग का सृजन किया, वही परमेश्वर है। जिस ने पृथ्वी को बनाया, और बनाया, और उसकी नेव की, उस ने उसे खाली होने के लिथे नहीं, परन्तु रहने के लिथे बनाया। वह कहता है, "मैं यहोवा हूं और कोई दूसरा नहीं है।" इसलिए ईश्वर एक है, और उस पर जोर दिया गया है।

ईश्वर की शक्ति और संप्रभुता पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। ईश्वर की शक्ति, उनके रचनात्मक कार्य और संप्रभुता पर संपूर्ण बाइबिल में सबसे महान अध्यायों में से एक, यशायाह 40 है। श्लोक 18 देखें, "आप ईश्वर की तुलना किससे करेंगे? आप उसकी तुलना किस छवि से करेंगे?" और फिर वह मूर्तिपूजा का उपहास करता है, "एक मूर्ति के रूप में एक कारीगर सोना ढालता है, या एक सुनार उसे सोने से मढ़ता है और सुनार चाँदी की जंजीरें बनाता है। जो कोई भी इस तरह के योगदान के लिए बहुत गरीब है वह एक ऐसा पेड़ चुनता है जो सड़ेगा नहीं; वह अपने लिये एक कुशल कारीगर ढूंढ़ता है, जो एक ऐसी नक्काशीदार मूरत तैयार करे जो हिले नहीं। क्या आप नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? क्या यह तुम्हें शुरू से नहीं बताया गया है? क्या तुम पृथ्वी की उत्पत्ति से नहीं समझे? वह जो परमेश्वर है, पृथ्वी के घेरे के ऊपर विराजमान है, और उसके लोग टिड्डे के समान हैं। वह आकाश को छत्र के समान तानता है, और रहने के लिये तम्बू के समान फैलाता है। वह हाकिमों को चूर कर देता है, और इस जगत के हाकिमों को चूर चूर कर देता है।" वह प्रकृति और इतिहास दोनों पर संप्रभु है, वह निर्माता है। श्लोक 26, "अपनी आँखें ऊपर उठाओ, और

देखो कि इन वस्तुओं को किसने बनाया है, जो तारों की सेना को गिनकर बाहर लाता है, वह उन सभी को नाम से बुलाता है, अपनी शक्ति की महानता और अपनी शक्ति के बल पर, नहीं एक लापता है।" यहाँ शक्तिशाली ईश्वर है जो प्रकृति और इतिहास को नियंत्रित करता है। श्लोक 27, "हे याकूब, तू क्यों कहता है, और हे इस्राएल, तू क्यों कहता है: मेरा मार्ग यहोवा से छिपा है, और मेरा न्याय मेरे परमेश्वर ने छोड़ दिया है?" क्या आप नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? यहोवा अनन्त परमेश्वर है, पृथ्वी के छोर का रचयिता है।" इसलिए जोर दैवीय शक्ति और संप्रभुता पर है। वह सारी पृथ्वी का रचयिता है।

साथ ही ईश्वर की पवित्रता और न्याय पर भी जोर दिया गया है। इस्राएल का परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो पाप का न्याय करता है। लेकिन परमेश्वर का एक नाम है जो यशायाह की विशेषता है, वह है "इज़राइल का पवित्र।" इसी तरह से अक्सर भगवान का उल्लेख किया जाता है। उनकी पवित्रता और उनके न्याय पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। लेकिन साथ ही उसकी दया पर भी जोर है। वह अपने लोगों को ढूँढ़ता है। वह उन्हें वापस अपनी ओर खींचता है, यहाँ तक कि निर्णय में भी दया होती है। वह चाहता है कि उसके लोग पश्चाताप करें, और जब उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया, और अंततः उन्हें देश से बाहर निकाल दिया गया, तो अवशेष को वापस लाया गया। इसलिए प्रेम और दया पर जोर है। तो ये ईश्वर के बारे में शिक्षाओं के बारे में केवल व्यापक, सामान्य टिप्पणियाँ हैं।

जहां तक अपने लोगों के साथ परमेश्वर के रिश्ते के बारे में शिक्षा देने की बात है, तो वहां ध्यान अनुबंध के रिश्ते पर है। लेकिन ऐसा कहने के बाद, दिलचस्प बात यह है कि आपको भविष्यवक्ताओं द्वारा बड़े पैमाने पर *बेरिट*, *वाचा* शब्द का उपयोग नहीं मिलता है। यदि आप सभी भविष्यवाणियों की पुस्तकों, प्रमुख और लघु भविष्यवक्ताओं को पढ़ें, तो "वाचा" शब्द की 65 बार आवृत्ति होती है। कई भविष्यवक्ताओं में, इस शब्द का कोई संदर्भ ही नहीं है। दिखता ही नहीं। इसका उपयोग ओबद्याह, जोएल, योना, अमोस, मीका, नहूम, सपन्याह या हबक्कूक में नहीं किया गया है। एक समय था जब लोग भविष्यवाणी की पुस्तकों को देखते थे और कहते थे, "ओह, 'वाचा' शब्द प्रकट नहीं होता है, इसलिए इन भविष्यवक्ताओं को वाचा के बारे में कुछ भी नहीं पता था।" अपने उद्धरण देखें, पृष्ठ 7, पृष्ठ के नीचे, *पुराने नियम के धर्मशास्त्र* में वाल्टर आइक्रोडट बताते हैं,

"महत्वपूर्ण बिंदु यह नहीं है - जैसा कि एक बहुत ही भोली आलोचना कभी-कभी सोचती है - की घटना या अनुपस्थिति हिब्रू शब्द *b'rit*, लेकिन तथ्य यह है कि पुराने नियम में विश्वास के सभी महत्वपूर्ण कथन इस धारणा पर आधारित हैं, चाहे वह स्पष्ट हो या न हो, कि इतिहास में ईश्वर के एक स्वतंत्र कार्य ने इज़राइल को ईश्वर के लोगों की अद्वितीय गरिमा तक पहुँचाया, जिसमें उसकी प्रकृति और उद्देश्य को प्रकट किया जाना था। इसलिए, वास्तविक शब्द 'संविदा' एक अधिक दूरगामी निश्चितता के लिए केवल कोड-शब्द है, जिसने इज़राइल के विश्वास की नींव की सबसे गहरी परत बनाई, और जिसके बिना वास्तव में इज़राइल का अस्तित्व ही नहीं होता। बिल्कुल इज़राइल।" दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ताओं का पूरा संदेश इस धारणा पर आधारित है कि ईश्वर और उसके लोगों के बीच एक ऐसा वाचापूर्ण संबंध था। वे "संविदा" शब्द का उपयोग करते हैं या नहीं, इसका वास्तव में इससे कोई लेना-देना नहीं है। मुझे लगता है कि इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण बाद में अमोस की पुस्तक में मिलता है। अमोस की किताब में *बेरिट* शब्द बिल्कुल नहीं आता है। लेकिन अमोस के संदेश लगातार वाचा भाषा, शब्दावली और वाचा अवधारणाओं का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए हम यह देखने और देखने से यह निर्धारित नहीं करते हैं कि शब्द या नहीं और वाचा का विचार भविष्यवक्ताओं के संदेश में मौजूद था या नहीं, यह देखकर कि वे *बेरिट शब्द का उपयोग करते हैं या नहीं*।

लेकिन भविष्यवाणियों की किताबों में भगवान के अपने लोगों के साथ संबंध के बारे में शिक्षा वाचा के रिश्ते पर आधारित है, और इस वजह से, भविष्यवक्ता चेतावनी और न्याय के इन संदेशों के साथ आते हैं। वाचा में आज्ञाकारिता के लिए आशीर्वाद और अवज्ञा के लिए शाप शामिल थे, और आने वाले न्याय के बारे में चेतावनियाँ वाचा के शाप में निहित हैं। भविष्यवक्ता आते हैं और परमेश्वर के लोगों को आज्ञाकारिता और परमेश्वर की आराधना करने के लिए बुलाते हैं। वह कहां से आता है? यह वाचा से आता है। वे वाचा की शर्तों का पालन करने और अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्रभु अपने भगवान से प्यार करने के लिए बाध्य थे। तो अपने लोगों के साथ भगवान के रिश्ते के संबंध में मौलिक धारणा वाचा का रिश्ता है।

आइए बी पर चलते हैं: "नैतिकता और सामाजिक रिश्ते।" नैतिकता और सामाजिक संबंधों के प्रश्नों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि भविष्यवक्ता

किसी व्यक्ति की नैतिकता और सच्चे धर्म के बीच बहुत करीबी संबंध देखते हैं। दूसरे शब्दों में, मोज़ेक कानून में किसी के पड़ोसी के प्रति प्यार और किसी के दैनिक जीवन में इसका क्या अर्थ है या क्या शामिल है, के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। सच्चे धर्म में सामाजिक न्याय की चिंता और उसका अभ्यास शामिल है। इसलिए भविष्यवक्ता अपने दिनों में इस्राएल में मौजूद सामाजिक बुराइयों को प्रभु से धर्मत्याग के रूप में देखते हैं, अपने वाचा के दायित्वों से विमुख होते हैं। इसलिए वे ऐसी चीजों के खिलाफ बोलते हैं। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 22:13 को देखें। यिर्मयाह यहोयाकीम के बारे में कहता है, "हाय उस पर जो अधर्म से अपना महल बनाता है। उनके ऊपरी कमरे अन्याय के द्वारा, अपने देशवासियों से बिना मूल्य के काम करवाते थे, उन्हें उनके श्रम का भुगतान नहीं करते थे। वह कहता है, "मैं अपने लिये विशाल ऊपरी कमरों वाला एक बड़ा महल बनवाऊँगा।" इसलिये उस ने उस में बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ बनाई, और उस पर देवदार की लकड़ी लगाई, और उसे लाल रंग से सजाया। क्या अधिक से अधिक देवदार रखना आपको राजा बनाता है? क्या तुम्हारे पिता के पास खाना-पीना नहीं था? उसने वही किया जो सही और उचित था, इसलिए उसके साथ सब कुछ अच्छा हुआ।" जो सही और न्यायपूर्ण है उसे करना क्या है? वह वाचा के मार्ग पर चलना है, जो सही और न्यायपूर्ण है उसे करना है। तो उसके साथ सब ठीक हो गया। "उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों के हितों का बचाव किया, इसलिए सब ठीक हो गया।" और फिर एक बहुत ही दिलचस्प अगली पंक्ति है, "क्या मुझे जानने का यही मतलब नहीं है? प्रभु की यही वाणी है।" प्रभु को जानने का क्या मतलब है? वह संविदात्मक भाषा भी है। वह यहोवा को संप्रभु के रूप में पहचानना और उसकी शर्तों को बाध्यकारी के रूप में पहचानना है। प्रभु को जानने का यही अर्थ है। तुम्हारे पिता ने ऐसा किया, परन्तु तुम, यहोयाकीम, ने ऐसा नहीं किया। पद 17, "तू ने अपनी आंखें और अपना मन बेईमानी के लाभ, और निर्दोषों का खून बहाने, और अन्धे और अन्धे उठाने पर लगाया है।" इस कारण यहोवा यहूदा के योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के विषय में यों कहता है, वे उसके लिये यह कहकर विलाप नहीं करेंगे, कि हाय मेरे भाई! हाय मेरी बहन! वे उसके लिये यह कहकर विलाप नहीं करेंगे, "हाय मेरे स्वामी! हाय, उसका वैभव!" उसे गधे की तरह दफनाया जाएगा - घसीटकर यरूशलेम के फाटकों के बाहर फेंक दिया जाएगा।" पद 9 तक, "क्योंकि तुम प्रभु से दूर हो गए हो।"

आमोस 8:4-12 को देखें, “हे दरिद्रों को रौंदनेवालों, और देश के कंगालोंको नाश करनेवालों, यह सुनो, कि नया चांद कब होगा कि हम अन्न बेच सकें, और उस दिन सब्त का दिन समाप्त हो। क्या हम गेहूँ का विपणन कर सकते हैं? - माप में कंजूसी करना, कीमत बढ़ाना, और बेईमान तराजू से धोखा देना, गरीबों को चाँदी से और जरूरतमंदों को एक जोड़ी चप्पलों से खरीदना, यहाँ तक कि गेहूँ के साथ झाड़ू भी बेचना।

दुनिया बहुत ज्यादा नहीं बदली है. कुछ साल पहले किसी ने थैंक्सगिविंग के समय सुपरमार्केट में टर्की पर एक सर्वेक्षण किया था। आप एक टर्की उठाते हैं और उस पर "13 ½ पाउंड" लिखा होता है। उन्होंने इन सभी चीज़ों का वजन किया और पाया कि उनका वज़न उस चीज़ पर अंकित वजन से लगातार कम था। बेईमान तराजू से धोखा, बहुत कुछ नहीं बदला। "गेहूँ के साथ झाड़ू-पोछा भी बेचना।" परन्तु भविष्यवक्ता इस प्रकार की चीज़ों के विरुद्ध बोलते हैं।

फिर अदालतों में भ्रष्टाचार है. मीका 3:9-11 को देखें, “हे याकूब के घराने के हाकिमों, हे इस्राएल के घराने के हाकिमों, तुम न्याय को तुच्छ जानते और सब धर्मों को बिगाड़ते हो, यह सुनो; जो खून बहाकर सिय्योन को, और दुष्टता करके यरूशलेम को बनाते हैं। उसके नेता रिश्वत के लिए न्याय करते हैं, उसके पुजारी कीमत के लिए पढ़ाते हैं, और उसके भविष्यवक्ता पैसे के लिए भाग्य बताते हैं। तौभी वे यहोवा पर भरोसा करके कहते हैं, 'क्या यहोवा हमारे बीच में नहीं है?'" यह घृणित बात है।

यशायाह 3:16-26 के भौतिकवाद को देखें। यह एक बहुत ही वर्णनात्मक मार्ग है. "प्रभु कहते हैं," और यहां हमें यरूशलेम की महिलाओं, सिय्योन की महिलाओं का वर्णन मिलता है। “सिय्योन की स्त्रियाँ घमण्डी हैं, गर्दन फैलाए चलती हैं, आँखें तरेरती हैं, कूल्हे हिलाती हुई अकड़ती हैं, टखनों पर आभूषण झनझनाती हैं। इस कारण यहोवा सिय्योन की स्त्रियोंके सिर पर फोड़े डालेगा; यहोवा उनकी खोपड़ी गंजा कर देगा।' उस दिन यहोवा उनका वैभव छीन लेगा।” यहां आपको सिय्योन की इन महिलाओं की सजावट का विवरण मिलता है। “चूड़ियाँ और हेडबैंड और अर्धचंद्राकार हार, झुमके और कंगन और घूँघट, हेडड्रेस और टखने की चेन और कमरबंद, इत्र की बोतलें और आकर्षण, हस्ताक्षर अंगूठियाँ और नाक के छल्ले, बढ़िया वस्त्र और टोपी और लबादा, पर्स और दर्पण, और सनी के वस्त्र और मुकुट और शॉल।” तो यह उस समय की महिलाओं की

तस्वीर है फिर भी यह कई मायनों में आज के समान ही लगती है।

परन्तु फिर यशायाह कहता है, “सुगन्ध की सन्ती दुर्गन्ध, और कमरबन्द की सन्ती रस्सी होगी; अच्छे से सजे बालों के बजाय गंजापन; सुन्दर वस्त्र की सन्ती टाट का कपड़ा; खूबसूरती की जगह ब्रांडिंग. तेरे पुरूष तलवार से, और तेरे योद्धा युद्ध में मारे जाएंगे। सिथ्योन के फाटक विलाप और विलाप करेंगे; वह निराश्रित होकर जमीन पर बैठेगी।” फैसला आने वाला है. इसलिए भविष्यवक्ताओं में नैतिक और सामाजिक संबंधों के बारे में पर्याप्त मात्रा में जानकारी है।

प्रतिलेखित: एरिक टर्नर, डैन फ़िस्टनर , जॉन अल्वाराडो, जॉन क्लैन्सी
एलेक्स बार्कर, जॉन स्टीफ़न (संपादक)
प्रतिलेखित: जॉन स्टेसी, जज एब्स , एलीसन फेबर, जेफ लेन, स्टीव कैपुजिएलो ,
कोडी लार्किन और क्रिस्टन रेमी (संपादक)
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
केटी एल्स द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया